thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६० अंक ५ जनवरी २०१३ पौष २०६९ वार्षिक मूल्य १०० रु०

देश की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वाले दो स्मरणीय वीर सपूत

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस
जिनकी जयन्ती २३ जनवरी को है।

लाला लाजपतराय
जिनकी जयन्ती २८ जनवरी को है।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : डॉ० सुरेन्द्रकुमार
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 100 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1100 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।
8. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में निकला हुआ लेख सुधारक में नहीं छापा जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : ६० | अंक : ५
जनवरी २०१३ | विक्रमाब्द २०६९
दयानन्दाब्द १८७ | कलिसंवत् ५११२
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११२

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	दिल्ली बलात्कार काण्ड : दिशाहीन व्यवस्था तन्त्र की दर्दनाक देन	१
२.	चमकीला आवरण	४
३.	ऋषि-परम्परा के पोषक पूज्य आचार्य प्रियव्रत जी	७
४.	'गुरुग्रन्थ साहिब' में वेदों की महिला	११
५.	अच्छे काम करने से आयु लम्बी होती है	१३
६.	पढ़िये कैसे क्रूरता से हत्या की जाती है निरीह गाय-बैलों की	१५
७.	टापुओं के समूह देश-फिजी से एक पत्र	१७
८.	आर्य वीर दल मुम्बई के स्वर्ण जयन्ती समारोह पर सम्मान	१९
९.	११वीं अखिल भारतीय गुरुकुल क्रीड़ा प्रतियोगिता धूमधाम से सम्पन्न	२०

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १०० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

–व्यवस्थापक सुधारक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय....

दिल्ली बलात्कार काण्ड : दिशाहीन व्यवस्था तन्त्र की दर्दनाक देन

❑ डॉ. सुरेन्द्रकुमार

दिल्ली बलात्कार कांड की शिकार छात्रा/ दामिनी जिन्दगी हार गई। डाक्टरों की लाख कोशिशों के बाद भी उसको बचाया नहीं जा सका, यद्यपि वह तन-मन से आहत होने के बावजूद जीना चाहती थी। उसके साथ हुए दरिंदगी के व्यवहार ने देश-विदेश को पूरी तरह झकझोर दिया जिसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण देश में लगातार आन्दोलन उठता रहा। दिल्ली भी उबलती रही और देश भी उबलता रहा। सभी की यह मांग रही कि बलात्कारी और हत्यारे दरिंदों को फांसी की सजा होनी चाहिए। छात्रा की मृत्यु के उपरान्त शोक की जो लहर जनता में व्याप्त हुई उसने देश के प्रधानमंत्री और कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी सहित अनेक मन्त्रियों को सांत्वना देने के लिए दिवंगत छात्रा के माता-पिता के सामने उपस्थित होने पर विवश कर दिया जबकि ऐसा कभी-कभी विरले अवसरों पर ही होता है। यह सब इसलिए हुआ कि दिवंगत छात्रा 'सम्पूर्ण देश की बेटी' बन गई थी और उस बेटी के पक्ष में सारा देश एकजुट होकर क्रोधित था- चरमरायी व्यवस्था के प्रति, कानूनी शिथिलता के प्रति, देश की राजधानी में अपराधियों के बढ़ते हौंसलों के प्रति। देश के साथ मीडिया भी पूरे आक्रोश में था और इलेक्ट्रोनिक मीडिया तो जोर - जोर से चीखकर अपने और देश के आक्रोश को शब्दों की सचित्र अभिव्यक्ति दे रहा था। किन्तु इस सारी चीख-पुकार, आक्रोश-क्रोध में इसप्रकार के कांडों के जनक असली कारण भी टी.वी. पर पूरे उत्साह के साथ अपना वर्चस्व बनाये हुए थे। आन्दोलन के कारण न उनमें कभी आई, न वे बंद हुए, न उनके लिए किसी ने आक्रोश प्रकट किया। ऐसे समय में भी एक विज्ञापन तो पूरी ढीठता के साथ लड़की पटाने के विकल्प बताता रहा। लड़कियों के पीछा करने के फिल्मी दृश्य पूरी शान के साथ दिखाये जाते रहे। वही नग्नता, अश्लीलता परोसी जाती रही जो उक्त कांड से पहले परोसी जा रही थी। वही द्वि- अर्थी फूहड़, गंदे गाने, संवाद और हास्य चलते रहे जिनकी सभ्य समाज निन्दा करता है। हीरोइनें और लड़कियाँ प्रतिदिन नीचे सरकते अधोवस्त्रों और ऊपर को सिकुड़ते ऊपरी वस्त्रों को पहनकर इठलाती रहीं। सर्दियों के वस्त्रों के विज्ञापन बड़ी बेशर्मी के साथ वस्त्रों से प्राप्त ऊष्मा का संदेश नारी शरीर के माध्यम से देते रहे। गौरे वर्ण बना देने वाली क्रीम का परिणाम अधिक से अधिक युवाओं का घूरना प्रदर्शित किया जा रहा है। हालांकि सैक्सी विशेषण किसी भी सभ्य समाज में अशिष्टता के अन्तर्गत माना जाना चाहिए, क्योंकि इसका अर्थ है सैक्सभावना को भड़काने वाला या वाली, किन्तु इसका प्रयोग गौरव के साथ किया जाता है। पर पुरुषों और परस्त्रियों के लिए प्रयुक्त इस विशेषण

thearyasamaj.org

का जो ध्वन्यर्थ है, क्या छात्रा के साथ घटित दुर्घटना उसी प्रवृत्ति का दुष्परिणाम नहीं है? आज अधिकांश विज्ञापनों, अधिकांश फिल्मों, अधिकांश टी.वी. सीरियलों, अधिकांश प्रिंट मीडिया का लाभप्राप्ति का साधन कामवासना बन गई है। आन्दोलन के समय इन विकृतियों की ओर किसी का न तो ध्यान गया और न गुस्सा ही फूटा। चीखती महिलाओं ने उनको 'भोग की वस्तु' निरन्तर प्रस्तुत किये जाने पर भी कभी नहीं चीखा। वस्तुतः, असली कारण तो यही हैं जो बलात्कार की ओर प्रेरित करने वाले और महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों को उकसाने वाले वातावरण और परिवेश को निर्मित करते हैं। स्वतन्त्रता के नाम पर यह उसका दुरुपयोग है और अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर अभिव्यक्ति की विकृति है। इन कारणों से सामान्य मनुष्यों के मन में वासना का एक स्थायीभाव घर कर लेता है जो अवसर पाकर अपराध के रूप में प्रकट हो जाता है। यही वातावरण व्यक्ति और समाज के पतन का कारण है जिसमें महिला जगत् की भी उतनी ही भागीदारी है। कैसी विचित्र बात है कि हम ऐसे विकृत वातावरण को निर्मित करके सामान्य सांसारिक जनों से यह आशा करते हैं कि वे सिद्धयोगियों के समान संयमी बने रहें। संयम के वातावरण में भी जो मनुष्य संयम की मर्यादा को तोड़ देते हैं, उनके सामने हम घोर असंयम का वातावरण परोसकर उनसे संयम की उम्मीद रखते हैं। अपराधी प्रवृत्ति के लोगों से देवता जैसे व्यवहार की आशा करते हैं, इससे बढ़कर हमारी सोच की विडम्बना क्या हो सकती है? भूल यह है कि हम भूल को छोड़कर शाखाओं को सींच रहे हैं, आन्तरिक कारणों को छोड़कर बाहरी कारणों को दूर करने में समस्या क़ा समाधान मान बैठे हैं।

यह स्वाभाविक है कि धीरे-धीरे देश का गुस्सा भी शान्त हो जायेगा, उसके साथ शासन-प्रशासन की सक्रियता भी शिथिल पड़ जायेगी और फिर से शासनतन्त्र अपने पुराने ढर्रे पर चलने लगेगा, क्योंकि वह ढर्रा इस देश के शासन-प्रशासन की नियति बन गया है। किसी में ढर्रे को बदलने की न ललक है, न इच्छाशक्ति और फिर वही आशंका मंडराने लगेगी, जो इस छात्रा के साथ हुई। जब तक उक्त मूल कारणों को दूर नहीं किया जायेगा तब तक अपराधविहीन समाज के निर्माण की कल्पना करना मृगतृष्णा मात्र है। आन्दोलन से तत्कालीन समस्या का तो समाधान हो सकता है किन्तु स्थायी व्यवस्था-परिवर्तन तो अपराधों के मूल कारणों को दूर करने पर ही हो पायेगा। प्राचीन शास्त्रकारों ने हजारों वर्षों के अनुभव के आधार पर 'संस्कार' और 'मर्यादा' को पारिवारिक एवं सामाजिक नियन्त्रण का उपाय मानकर उनकी स्थापना पर बल दिया था। आधुनिकता के व्यामोह में हमने खुद उनको चिंदी-चिंदी कर दिया। उसका दुष्परिणाम दिल्ली का दामिनी कांड है। यदि हमने मूल कारणों पर ध्यान नहीं दिया तो भविष्य में न जाने कितनी दामिनियां अपराध की भेंट चढ़ेगी, इस पर हमें विचार करना चाहिए।

***

thearyasamaj.org

ओ३म्

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध (मान्यता प्राप्त) आर्षपाठविधि के निःशुल्क शिक्षाकेन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

९८वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक ०९-१० मार्च २०१३ ई०

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि पर्व पर गुरुकुल झज्जर का वार्षिक महोत्सव फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी व चतुर्दशी २०६९ वि० तदनुसार ९-१० मार्च, शनिवार, रविवार को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु-संन्यासी और राज्य सरकार के राजनेता पधार रहे हैं। अतः निवेदन है कि परिवार और इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्म का लाभ उठायें तथा महोत्सव की शोभा बढ़ायें।

यजुर्वेदपारायण महायज्ञ

महोत्सव के निमित्त ६ मार्च बुधवार से यजुर्वेदपारायण महायज्ञ प्रारम्भ किया जायेगा। इसके लिए घृत, सामग्री और समिधा का दान आना भी प्रारम्भ हो चुका है। प्राणिमात्र के कल्याणकारी इस पवित्र यज्ञ में घृत, सामग्री, गूगल, समिधा आदि के रूप में आप सभी का सहयोग वांछित है। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें जिससे उनकी व्यवस्था की जा सके।

व्यायाम प्रदर्शन

९ मार्च, शनिवार के दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया जायेगा जिनमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखंभ, लाठी, भाला, तलवार, धनुष-बाण, लोहे के सरिये को गले से मोड़ना, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य के बल से जीप रोकना आदि होंगे।

सूचना :-

१. गुरुकुल की स्वामिनी 'विद्यार्थी सभा गुरुकुल झज्जर' का साधारण वार्षिक अधिवेशन ९ मार्च को रात्रि के ८ बजे प्रारम्भ होगा। सभी सदस्य समय पर पधारें।
२. १००० रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों, समाजों और ग्रामों के नाम पत्थर पर अंकित किये जायेंगे।
३. ११००० रु० वा इससे अधिक दान देने वालों के नाम का अलग से पत्थर लगेगा।
४. एक लाख वा इससे अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से पत्थर तथा चित्र गुरुकुल के प्रमुख स्थल पर लगाया जायेगा।
५. ऋतु अनुकूल वस्त्र, बिस्तर साथ अवश्य लायें। भोजन तथा आवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

निवेदक

आचार्य विजयपाल	**डॉ० सुरेन्द्रकुमार**	**पूर्णसिंह देशवाल**
आचार्य	मन्त्री	प्रधान

thearyasamaj.org

चमकीला आवरण

❑ महात्मा ओममुनि

मनुष्यमात्र में जितने भी दोष उत्पन्न होते हैं वे सब सोने, चान्दी हीरे-जवाहरात आदि चमकीली वस्तुओं के कारण होते हैं। चोर चोरी करता है, डाकू डाका डालता है, वेश्या व्यभिचार करती है, कर्मचारी रिश्वत लेता है या दुकानदार वस्तुओं में मिलावट करता है अथवा अधिक भाव में सामान बिक्री करता है, इन सब बुराइयों के मूल में चमकीली वस्तुओं की इच्छा ही होती है। ईशोपनिषद् की श्रुति है—

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥

इस श्रुति का भावार्थ यह है कि सत्य का मुख एक चमकदार वस्तु की कामना रूपी ढकने से ढका हुआ है। यदि तुम अपनी उन्नति, अपने विकास अथवा अपने उत्थान की कामना रखते हो तो इस चमकदार ढकने को हटादो अर्थात् संसार की चमकीली-भड़कीली वस्तुओं की कामना मत करो। क्योंकि जब तक सत्य का ज्ञान न हो तब तक सत्य का आचरण भी नहीं हो सकता और जब तक सत्य का आचरण नहीं होगा तब तक मानव अपनी उन्नति, अपना विकास नहीं कर सकता।

इसका अभिप्राय यह हुआ कि जिस मनुष्य में चमक-दमक या तड़क-भड़क वाली वस्तुओं की कामना है तब तक वह कभी भी सत्य और पवित्र आचरण वाला जीवन नहीं बिता सकता। इन वस्तुओं की इच्छा से लोभ और काम आदि विकार उत्पन्न होते हैं। लोभी और कामी मनुष्य किसी भी अवस्था में विश्वास के योग्य नहीं हो सकता। आज संसार में जितना अनाचार व दुराचार दृष्टिगोचर हो रहा है, इसके मूल में इन्हीं वस्तुओं की कामना मुख्य कारण है—

एक बार एक राजा किसी रमणीय पर्वत की सैर करके अपने नगर को वापिस लौट रहा था। रास्तें में एक सुनसान स्थान पर एक वृक्ष के नीचे उसने एक साधु को बैठे देखा। उसके पास न कोई वस्त्र, न कोई पात्र, न कोई बिस्तर-चारपाई और न कोई खाद्य सामग्री थी। वर्षा व धूप से बचने के लिए उसके पास झोंपड़ी भी नहीं थी। साधु की यह दशा देखकर राजा ने सोचा— मेरे राज्य में ऐसे गरीब व्यक्ति भी हैं जिनके पास दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी नहीं हैं, यह तो मेरे लिए कोई अच्छी बात नहीं है। राजा ने साधु की सहायता के लिए पचास रुपये एक सेवक के हाथों भेजे। किन्तु साधु ने यह कहते हुए रुपये लेने से मना कर दिया कि इन्हें किसी दीन को दे देना। सेवक ने वापिस आकर राजा से साधु की कही बात सुना दी। राजा ने सोचा शायद रुपये कम होने के कारण साधु ने नहीं लिये। राजा ने दोबारा सेवक को सौ रुपये देकर भेजा, किन्तु साधु ने इस बार भी यही उत्तर दिया। राजा ने पुन: पाँच सौ रुपये देकर भेजा, किन्तु साधु ने फिर भी वही बात दोहराई, किसी दीन को दे देना। राजा ने अब पाँच हजार रुपये देकर सेवक को भेजा, किन्तु साधु का तो वही रटा-रटाया उत्तर था, इसे किसी दीन को दे देना।

thearyasamaj.org

अब राजा से रहा न गया, वह स्वयं साधु के पास गया और आदरपूर्वक पूछा— हे साधु महाराज! आपकी सहायता के लिए मैं बार-बार अधिक रुपये भेजता रहा किन्तु आपने उन्हें लेने की बजाय यह कहकर वापिस कर दिये कि किसी दीन को दे देना। साधु महाराज! आपके पास दैनिक उपयोग की कोई भी वस्तु नहीं, फिर आपसे बढ़कर दीन कौन होगा? तब साधु ने कहा- हम तो राजा हैं, हमें क्या कमी है।

साधु की बात सुनकर राजा ने आश्चर्य से पूछा कि- राजा के पास तो सेना होती है, महल-अटारी, किला और धन का खजाना होता है। किन्तु आपके पास तो फाका-मस्ती के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। तब साधु ने कहा कि- राजा लोग सेना अन्य राजाओं के भय व अपनी सुरक्षा के लिए रखते हैं। हमें न किसी का भय है और न हमारा कोई शत्रु है। राजा अपने सैनिकों, सेवकों व महल में रानियों आदि के व्यय के लिए कोष रखता है। हमारा कोई व्यय नहीं है, फिर हम कोष क्यों रखें? सुनो राजन्! हमारे पास तो अनमोल रसायन है, जब चाहें उससे इच्छानुसार तांबे का सोना बना सकते हैं। साधु की यह बात सुनकर राजा वहाँ से चल पड़ा। रास्ते में उसने विचार किया कि अगर साधु रसायनी न होता तो इतना धन वापिस क्यों करता, अवश्य ही यह साधु रसायनी है। रात को सोते समय राजा को यह विचार फिर आया और उसने सोचा कि क्यों न साधु से कई मन सोना बनवा लिया जाये। तब मैं सेना का विस्तार करके अन्य राज्य को जीत सकता हूँ और अधिक शक्तिशाली राजा बन सकता हूँ। राजा ने उसी समय साधु के पास जाना ठीक समझा ताकि किसी को पता न लग सके। राजा उसी समय चुपचाप अकेला साधु के पास चल पड़ा। साधु के पास पहुँचा तो पाँव की आहट सुनकर साधु ने पूछा— कौन है? राजा ने कहा— महाराज! मैं आपका सेवक राजा हूँ। साधु ने पूछा— इस समय क्यों आये हो? तब राजा ने अपने मन का सब हाल साधु से कह दिया और कहा कि आप हजार-दो हजार मन सोना बना दें। तब साधु ने राजा से पूछा कि- अब बता कि दीन तू है या मैं हूँ? मांगने तुम आये हो या मैं आया था? यह सुनकर राजा ने विनम्र भाव से कहा- हां साधु महाराज, निःसन्देह दीन तो मैं ही हूँ। आप कृपया करके सोना बना दें।

तब साधु ने कुछ सोचकर कहा- ठीक है, बना देंगे सोना, तुम हमारे पास प्रतिदिन आया करो। साधु के कहे अनुसार राजा प्रतिदिन साधु के पास आने लगे। साधु उसे प्रतिदिन तत्त्वज्ञान का उपदेश करते रहे। इस प्रकार एक वर्ष बीत जाने के पश्चात् जब राजा तत्त्वज्ञान का विद्वान् बन गया और उसकी सब सांसारिक वासनाएं नष्ट होगई, तब साधु ने राजा से कहा— राजन्! अब तुम जितना चाहो तांबा ले आओ, मैं सोना बना दूंगा। तब राजा ने हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक कहा कि- हे गुरु महाराज! वह तांबा तो अब कभी का सोना बन चुका है।

वास्तव में तृष्णा और मोह-माया के वश हुआ मनुष्य अनित्य को नित्य बनाने हेतु अनगिनत पाप करता है। उस मनुष्य से अधिक मूर्ख कौन होगा जो धन के भरोसे परमात्मा के अटल नियमों

thearyasamaj.org

को भुला देता है। नीति में कहा गया है कि- 'विपत्ति के लिए धन एकत्र करना चाहिए। परन्तु जब विपत्ति आती है तो संचित धन भी नष्ट हो जाता है' किन्तु जो सच्चे ईश्वरभक्त हैं वे किसी भी प्रकार की आपत्ति-विपत्ति से नहीं घबराते। क्योंकि वे जानते हैं कि परमात्मा के राज्य में आपत्ति या विपत्ति नाम की कोई वस्तु नहीं है। प्रभु जो भी करते हैं, अच्छा ही करते हैं। तत्त्वज्ञानी प्रभुभक्त जानते हैं कि धन की तृष्णा से अधिक दु:खदायी कोई पदार्थ नहीं है। काला भयंकर सर्प भी स्पर्श से बहुत नर्म-मुलायम लगता है, किन्तु उसके काट लेने पर मृत्यु निश्चित है। इसी प्रकार सभी चमकीले पदार्थ बहुत मनभावन लगते हैं, परन्तु वास्तव में ये मानव को सत्य से दूर ले जाकर विनाश का कारण बनते हैं। परमात्मा ने आत्मा को इन्द्रियों, मन व शरीर का स्वामी बनाया है, न कि इनका दास बनकर सत्य धर्म से दूर होने के लिए। वेद श्रुति के माध्यम से प्रभु उपदेश दे रहे हैं कि चमकीली वस्तुओं के आवरण में सत्य का मुख छिपा हुआ है। यदि तुम आत्मिक बल की उन्नति और सत्यधर्म के ज्ञाता बनना चाहते हो तो सर्वप्रथम सत्य को ढकनेवाले चमकीले आवरण को हटादो, तभी तुम यथार्थ सत्य का साक्षात्कार कर पाओगे। भगवान् मनु के अनुसार लोभी व कामी पुरुष कभी धर्म के मर्म को नहीं जान सकता। किसी ने ठीक ही कहा है कि—

कामी, क्रोधी, लालची, इनसे न भक्ति होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति-वर्ण, कुल खोय॥

वैदिक भक्ति साधन आश्रम,
आर्यनगर, रोहतक (हरियाणा)

खाके - वतन का मुझ को हर ज़र्रा देवता है

विद्रोह की मशाल अपने हाथ में उठाने वाले पंजाब केसरी "लाला लाजपत राय"

मूर्तिमान् देशभक्त, शिक्षा एवं संस्कृति प्रचारक, महान् स्वतंत्रतासेनानी, प्रसिद्ध आर्यसमाजी, राष्ट्र के लिये अपने प्राणों का बलिदान देनेवाले क्रान्तिकारी लाला लाजपतराय का जन्म २८ जनवरी १८६५ को ढुँडे के गाँव, फिरोजपुर पंजाब में हुआ।

स्वामी दयानन्द की वैचारिक क्रान्ति से प्रभावित होकर आर्यसमाज के सभासद बने। उनकी यह अनल वाणी हर देशभक्त भारतीय को नई सोच प्रदान करती है। "अपने अतीत को ही निहारते रहना व्यर्थ है। जब तक हम उस अतीत पर गर्व करके, योग्य भविष्य के निर्माण के लिए प्रयत्न न करें। हम अपने पूर्वजों की हड्डियों पर अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकते। उनकी उपलब्धियों की स्मृति हमको प्रेरणा तो दे सकती है। अतीत के गौरव का इतिहास हमको आह्लादित भी कर सकता है परन्तु जीवित रहने के लिये और सम्मान के साथ जीवित रहने के लिए हमको वर्तमान समय की संस्थाओं और संस्कृति के शास्त्रागार से सज्जित होकर वर्तमान में ही जीना होगा।" उनकी देशभक्ति से आतंकित अंग्रेजों ने १६ मई १९०७ में मांडले जेल में पहुँचाया, जहाँ उनके कारावास जीवन का नया अध्याय आरंभ हुआ। १७ नवम्बर १९२८ में वे चिरनिद्रा में सो गए। इस शहीद की शवयात्रा में लाखों लोगों ने भाग लिया।

लालाजी ने अपने संघर्षपूर्ण जीवन से परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को स्वतन्त्र कराने में अविस्मरणीय योगदान किया। उन्हें न सत्ता का मोह था और शासन से भय। उन्होंने अपने जीवन से बलिदानों का नया इतिहास लिखा।

कुछ आरजू नहीं है, बस आरजू फकत यह है।
रखदे कोई जरा-सी खाक-ए-वतन कफन में॥

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

***

thearyasamaj.org

ऋषि-परम्परा के पोषक पूज्य आचार्य प्रियव्रत जी

❑ ब्र० राजेन्द्र आर्य, आर्यसमाज शक्तिनगर
सोनभद्र-२३९२२२, (उत्तरप्रदेश)

(गतांक से आगे)

पूज्य आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति के तीनों ग्रन्थों के स्वाध्याय से मेरी उनके प्रति श्रद्धा बढ़ी। मुझे कपिल, कणाद, गौतम, व्यास, जैमिन्ति, पतञ्जलि, दयानन्द आदि ऋषियों का साक्षात् दर्शन करने का सुअवसर इस जीवन में मिला नहीं इसलिए ईश्वर की महती प्रेरणा से मैंने यज्ञ निवास, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) जाकर श्रेद्धय आचार्य जी का प्रत्यक्ष दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त किया।आचार्य जी का यही मेरे जीवन के लिए प्रथम व अन्तिम साक्षात्कार था। पूज्य आचार्य जी से मिलने पर उनका ऋषियों जैसा पवित्र जीवन देखकर मैं अभिभूत हो गया। आचार्य जी की मुझे जब भी याद आती है तो वहीं उनका विद्वत्ता, विनम्रता, सौम्यता आदि गुणों से युक्त आशीर्वाद प्रदान करते हुए दृश्य स्मृतियों में जाता है। पूज्य आचार्य जी का अन्तेवासी बनकर मुझे विद्या प्राप्त करने का तो सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका परन्तु उनकी बहुमूल्य कृतियों का स्वाध्याय आज भी बड़ी श्रद्धापूर्वक करता हूँ। इससे मुझे आचार्य जी का सत्संग अप्रत्यक्ष रूप में प्राप्त हो जाता है।

जिस किसी के मन में वेदों की शिक्षाओं एवं ऋषि दयानन्द की वैदिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार की सच्ची लग्न हो तो मेरी समझ से उसे पूज्य आचार्य जी की निम्न कृतियों का स्वाध्याय तो अवश्य ही करना चाहिए।

१- वरुण की नौका (२ भाग)
२- वेदोद्यान के चुने हुए फूल
३- वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त (तीन खण्ड)
४- वेद और उसकी वैज्ञानिकता भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य में
५- मेरा धर्म

उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की संक्षेपिका स्वाध्याय की प्रेरणा के लिए प्रस्तुत है- **वरुण की नौकाः-** श्रेद्धय आचार्य जी ने वेदों के वरुण सूक्तों को आधार बनाकर 'वरुण की नौका' की रचना की है। इस ग्रन्थ में ऋग्वेद और अथर्ववेद के चोदह वरुण सूक्तों की सुललित और मनोहारी व्याख्या है। वेद में वरुण के अनेक अर्थ हैं। वरुण परमात्मा को भी कहते हैं। पूज्य आचार्य जी ने इस ग्रन्थ में वरुण सूक्तों का परमात्मापरक अर्थ किया है। संसाररूपी सागर से पार जाने का साधन परमात्मारूपी नौका ही तो है। जो मनुष्य इसकी साधना, सान्निध्य व गुणानुवाद करता है, वही मोक्ष आनन्द को प्राप्त करता है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण सन् 1945 में गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार से प्रकाशित हुआ था। पुनःसाठ वर्ष पश्चात् ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण सन् 2006 में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर 'घूडमल प्रहलादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास हिण्डौन सिटी' राजस्थान ने साज-सज्जा के साथ प्रकाशित किया है। इस संस्करण की निम्न विशेषतायें हैं-

१. इस संस्करण में मन्त्रों को स्वर सहित छापा गया है।

२. मुद्रण की अशुद्धियों को दूर किया गया है।

thearyasamaj.org

३. पहले ग्रन्थ दो भागों मे था, अब दोनों भागों को इकट्ठा प्रकाशित किया गया है।

२. वेदोद्यान के चुने हुए फूलः- इस ग्रन्थ में वेद, ईश्वर, सृष्टिप्रलय, उपासना, स्वास्थ्य, जीवनशक्ति, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, राष्ट्रनिर्माण आदि विविध विषयों से सम्बन्ध रखनेवाले कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वेदमन्त्रों और सूक्तों का संग्रह किया गया है और उनकी विशद एवं मौलिक व्याख्या की गई है। संग्रह का एक-एक मन्त्र और उसका एक-एक शब्द हमारे जीवन को महान् बना देने की शक्ति रखता है। महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में यही तो कहा है- **'एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामधुग् भवति'**। अर्थात् यदि वेद के एक शब्द को भी भलिभांति समझ लिया जाये और समझकर उसके अनुसार आचरण किया जाये तो वह हमारे इस संसार को स्वर्ग बनाने की शक्ति रखता है तथा हमारे लिए कामधेनु बन जाता है। पूज्य आचार्य जी ने अपने इस ग्रन्थ के माध्यम से सन्देश दिया है कि वेदानुकूल आचरण से ही मनुष्य भगवान् के दर्शन पाकर उन रसनिधि के साक्षात्कार से मिलने वाले परमानन्द समुद्र में निमग्न रहने का अधिकारी भी बन जावेगा। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण विक्रम संवत् 2011 (सन् 1945) में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्वाध्याय मंजरी में प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ पर उत्तर प्रदेश राज्य की ओर से 400 रुपये तथा आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से 240 रुपये पुरस्कार मिला है। इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण सन् 1991 में आर्य साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक और विक्रेता श्री गोबिन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-110006 की ओर से प्रकाशित किया गया है। ग्रन्थ की अनुपलब्धता को देखते हुए गुरुकुल की प्राचीन गौरवपूर्ण धरोहर का तृतीय संस्करण सन् 2008 में श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन हरिद्वार द्वारा किया गया है।

३. वेदों के राजनीतिक सिद्धान्तः- यह ग्रन्थ वेद में वर्णित राजनीति विज्ञान के मार्मिक और मौलिक तत्त्वों को प्रस्तुत करता है। इस ग्रन्थ के तीन खण्ड हैं-

(1) संविधान काण्ड (Constitution of the State)

(2) अभ्युदय कांण्ड (Welfare of the State)

(3) प्रतिरक्षा काण्ड (Defance of the State)

यह कृति पूज्य आचार्य जी की सन् 1925 से लेकर 1983 तक के वर्षों की अनवरत साधना, वेद का निरन्तर अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन-मनन तथा लेखन का परिणाम है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग संविधान काण्ड में छोटे माण्डलिक राज्यों के निर्माण से लेकर धरती के चक्रवर्ती या विश्वराज्य तक के निर्माण के सम्बन्ध में वेद के विचारों को प्रदर्शित किया गया है। द्वितीय भाग अभ्युदय काण्ड में राष्ट्रों की प्रजाओं को सब प्रकार से सुख-समृद्धिशाली और आनन्दमय जीवनवाली बनाने के साधनों के विषय में वेद के विचारों को दर्शाया गया है। तृतीय भाग प्रतिरक्षा काण्ड में राज्य की प्रतिरक्षा के लिए सेनाओं का संगठन, संचालन, शस्त्रास्त्र और युद्धनीति आदि के सम्बन्ध में वेद के विचारों को प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार वेदों में सूत्र रूप में वर्णित और स्थान-स्थान पर बिखरे हुए राजनीति-विज्ञान के तत्त्वों का विशद मंथन करके एक सर्वांगपूर्ण वैदिक राजनीति शास्त्र की रचना की गई है। इस

thearyasamaj.org

ग्रन्थ को लिखने के लिए प्रेरणा का स्रोत मनुस्मृति का निम्न श्लोक रहा है।

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥

मनु ०१२/९००

अथात् वेदशास्त्र को जाननेवाला व्यक्ति सेनाओं का संघटन और संचालन कर सकता है, राज्य का संचालन कर सकता है, न्यायव्यवस्था का संचालन कर सकता है और सारे भूमण्डल के चक्रवर्ती राज्य का संचालन कर सकता है। यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समुल्लास: अथ राजधर्मान् व्याख्यास्याम: एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ग्रन्थ के राजप्रजाधर्म विषय को समझने में सहायक है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1938 में मीनाक्षीप्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ द्वारा किया गया है। सन् 1948 में इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का विमोचन तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीया श्रीमती इंन्दिरा गांधी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ है।

४. **वेद का राष्ट्रीय गीत:** वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति वेदों का स्वाध्याय करते समय वैदिक ऋषियों तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के उस मर्म तक पहुँच जाते थे जो साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों को अभिप्रेत था। इस ग्रन्थ में आचार्य जी ने अथर्ववेद के भूमि-सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या की है। इसमें एक आदर्श राष्ट्र की परिकल्पना की गई है, तथा यह बतलाया गया है कि राष्ट्रोन्नति की लिए राष्ट्रवासियों के जीवन में महान् सत्य, महान् ऋत, तेजस्विता, दीक्षा, तप, ब्रह्म एवं यज्ञ आदि मूलतत्त्व होने चाहिएं। इसके प्रारम्भ में आचार्य जी ने 98 पृष्ठ की एक विस्तत अनुशीलनात्मक भूमिका देकर वेद की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है। इस कृति के प्रथम संस्करण का प्रकाशन विक्रम संवत् 2012 (सन् 1955) में गुरुकुल स्वाध्याय मंजरी के 24वें पुष्प के रूप में हुआ था। देश भर के लोगों की मांग के कारण ग्रन्थ का पुन: प्रकाशन विक्रम संवत् 2050 (सन् 1994) में स्वामी श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा किया गया है। वैदिक संस्कृति एवं मातृभूमि से प्रेम रखनेवाले प्रत्येक राष्ट्रवासी को इस ग्रन्थ का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

५. **'वेद और उसकी वैज्ञानिकता' भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य में:**- पूज्य आचार्य जी का यह मौलिक शोध ग्रन्थ है। इसमें आचार्य जी ने भारतीय एवं पाश्चात्य वैदिक विद्वानों की अध्ययनशैली और अध्ययनगत निष्कर्षों का सूक्ष्मपरीक्षण-विवेचन कर उनकी असारता, अवैज्ञानिकता तथा जड़ता का उद्घाटन किया है तथा महर्षि दयानन्द के वेदविषयक विचारों का तटस्थ सांगोपांग विवेचन कर व्यापक फलक पर उनकी सार्वभौम प्रतिष्ठा का उपक्रम किया है। आचार्य जी ने इस ग्रन्थ के (१) विषय प्रवेश, (२) वेद और ईश्वरीय ज्ञान का सिद्धान्त, (३) ईश्वरीय ज्ञान वेद, (४) वेद का काल, (५) ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली, (६) महर्षि दयानन्द और वेदार्थ की याज्ञिक प्रक्रिया,(७) ऋषि दयानन्द और वेद के देवता, (८) वेद के ऋषि, (९) वेदों का अपना स्वरूप, (१०) वेद और इतिहास, (११) वेद विविध ज्ञान-विज्ञानों का ग्रन्थ है, (१२) वेद में जादू-टोने और अश्लीलता नहीं है, (१३) वेद एक धर्मग्रन्थ के रूप में, (१४) ऋषि

thearyasamaj.org

दयानन्द की वेदभाष्य शैली का परवर्ती विद्वानों पर प्रभाव और (१५) वैदिक विचारधारा को महर्षि दयानन्द की अभिनव देन शीर्षक, इन पन्द्रह अध्यायों में ऋषि दयानन्द की विचारधारा और मान्यताओं का सूक्ष्मता से अनुशीलन करते समय युक्तियुक्त तथा तर्कसंगत पाया है। इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण का प्रकाशन सन् 1990 में श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा किया गया है।

६. मेरा धर्मः- आचार्य जी का प्रस्तुत ग्रन्थ धर्मविषयक नौ निबन्धों का संकलन है। इनमें से प्रथम निबन्ध 'वैदिक धर्म में स्त्रियों की स्थिति' वैशाख संवत् 1988 (अप्रैल 1931) में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित सर्व-धर्म-सम्मेलन में पढ़ा गया था। उसके पश्चात् शेष सब निबन्ध वे हैं जो आर्यसमाज, लाहौर के उत्सवों पर आयोजित सर्व-धर्म-सम्मेलनों में सन् 1931 से लेकर 1942 ई० के मध्य पढ़े गये थे। इन सम्मेलनों के विषय, जिन पर विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने अपने अपने धर्म के दृष्टिकोण से विचार किया था, क्रम से इस प्रकार थे-'मेरा धर्म और गौ पालन' 'मेरे धर्म में वर्णित समाज-व्यवस्था', 'क्या धर्म राष्ट्रीय उन्नति में बाधक है?', 'मेरे धर्म में उपासना का प्रयोजन', 'मेरा धर्म और मांसभक्षण', 'मेरा धर्म और ब्रह्मचर्य', 'मेरे धर्म का अन्य धर्मविलम्बियों के प्रति दृष्टिकोण तथा मेरा धर्म ग्रन्थ और इलहाम'। पूज्य आचार्य जी ने इन सम्मेलनों में जो अपने भाषण के समय निबन्ध पढ़े थे, उनके निबन्धविषयक शीर्षक निम्न रखे थे-'वेद और गोपालन', 'वैदिक-समाज व्यवस्था', 'वैदिक धर्म और राष्ट्रोन्नति', 'वैदिक धर्म और उपासना', 'वैदिक धर्म और माँस-भक्षण', 'वैदिक धर्म और ब्रह्मचर्य', 'वैदिक धर्म और अन्य धर्मविलम्बी' तथा 'वेद और इलहाम'। इस संग्रह में आचार्य जी ने 'वैदिक धर्म और ब्रह्मचर्य' निबन्ध का शीर्षक 'वैदिक धर्म और ब्रह्मचर्य तथा पश्चिमी डाक्टर रखा है', पश्चिमी डाक्टरों की सम्मतियाँ उद्धृत की है। इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण सन् 1957 एवं द्वितीय संस्करण सन् 2003 में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित किया गया है।

आचार्य जी के अप्रकाशित ग्रन्थ निम्न हैं- **(१) सृष्टि उत्पत्ति का वैदिक सिद्धान्त और उसकी श्रेष्ठता। (२) अथर्ववेद के चुने हुए फूल। (३) समाज की रचना और उसकी आर्थिक व्यवस्था का वैदिक स्वरूप।**

उपर्युक्त अप्रकाशित ग्रन्थों की यदि पाण्डुलिपियाँ-सुरक्षित हों तो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के यशस्वी तथा समर्पित आचार्य एवं उपकुलपति श्रद्धेय डॉ० महावीर जी को इन बहुमूल्य कृतियों को धरोहर के रूप में संरक्षण हेतु स्वामी श्रद्धानन्द अनुसन्धान प्रकाशन केन्द्र द्वारा प्रकाशित करवाने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये। मेरे विचार से पूज्य आचार्य जी के प्रति आर्यों की यह एक सच्ची श्रद्धा सुमनाञ्जलि होगी।

आचार्य पण्डित प्रियव्रत वेदवाचस्पति को ऋषित्व तक पहुँचाने में उनकी कर्त्तव्यपरायणा सहधर्मिणी श्रीमती यशोदा देवी का सराहनीय योगदान रहा है। विचारगुरु श्रद्धेय आचार्य प्रियव्रत जी के १११वें जन्मदिवस पर मेरा उन्हें शतशः नमन।

***

thearyasamaj.org

'गुरुग्रन्थ साहिब' में वेदों की महिमा

❑ स्व० पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड

सिक्ख मत के प्रवर्तक गुरु नानक तथा अन्य गुरुओं ने वेदों के विषय में प्राय: स्थानों पर अपना भक्तिभाव दिखाया है, जिस का दिग्दर्शन इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि आजकल के सिक्ख अधिकतर वेदशास्त्र विरोधी हैं और उन में से अनेक तो अपने को आर्य-हिन्दुओं से सर्वथा पृथक् समझते हैं। कुछ स्पष्ट तथा प्रमुख वचनों को ही यहां उद्धृत किया जाता है।

१. **ओंकार वेद निरमए। राग रामकली महल्ला १ ओंकार शब्द १** अर्थात् ईश्वर ने वेद बनाए।

२. **हरि आज्ञा होए वेद पाप पुन्न विचारिआ।** मारुड खणे महल्ला ५ शब्द १। अर्थात् ईश्वर की आज्ञा से वेद हुए, जिस से मनुष्य पाप-पुण्य का विचार कर सकें।

३. **सामवेद, ऋग जजुर अथर्वण। ब्रह्मे मुख माइया है त्रैगुण। ताकि कीमत कीत कह न सकै को तिउ बोलै जिउ बोलाइदा।।**

मारु सोलहे महल्ला १ शब्द १७।

यहां भी चारों वेदों का नाम लेकर कहा है कि उन की कीमत (महत्त्व) कोई नहीं बता सकता। वे अमूल्य और अनन्त हैं।

४. **ओंकार उत्पाती। किया दिवस सभराती वणतृणत्रिभवन पाणी। चार वेद चारे खाणी।।** राग मारु महल्ला ५ शब्द १७। यहां कहा है कि ओंकार (परमेश्वर) ने ही दिन-रात, वन, घास तीनों लोक पानी आदि को बनाया और उसी ने चार वेदों को बनाया जो चार खानों के समान (ज्ञान कोष) हैं।

बसन्त अष्टपदियां महल्ला १ अ. ३ में वेदों के ज्ञान की अनन्तता का इन शब्दों में वर्णन पाया जाता है -

५. **वेद बखान कहहि इक कहिये। ओह बे अन्त किन लहिये?**

वेद के ज्ञान से अज्ञान मिट जाता है और उन के पाठ से बुद्धि शुद्ध होकर पापों का नाश हो जाता है, इस बात को निम्न शब्दों में सूचित किया गया है -

६. **दीवा तले अन्धेरा जाई। वेद पाठ मति पापा खाई। उगवै सूर न जापै चन्द, जहां गियान प्रगास अगियान मिटन्त।**

असंख्य ग्रन्थों के होते हुए भी वेद का पाठ सब से मुख्य है, इस बात को जपुजी १७ में इन शब्दों में बताया गया है-

७. **असंख्य ग्रन्थ मुखि वेद पाठ।।**

वेद शास्त्रों में मुख्यतया परब्रह्म का ही प्रतिपादन है, इस बात को **'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति'** के अनुसार गौंड महल्ला ५ शब्द १७ में इस प्रकार बताया गया है-

८. **सिमृति सास्तर वेद पुराण। पारब्रह्म का करहिं बखियान।।**

९. साधु सज्जन सदा वेद का व्याख्यान करते हैं, किन्तु भाग्यहीन नीच मनुष्य कुछ समझता नहीं। इस बात को टोडी महल्ला ५ शब्द २६ में इस प्रकार बताया गया है-

वेद बखियान करत साधुजन, भागहीन समझत नहीं।।

१०. **वेदों के पढने से उत्तम विद्या भगवान की कृपा से बढ़ती है, इस बात का श्लोक सहस्कृति महल्ला ५। १४ से इन शब्दों में वर्णन किया गया है -**

thearyasamaj.org

कहंत वेदा गुणन्त गुणिया, सुणत बाला वह विधि प्रकारा। दृडंत सुविद्या हरि हरि कृपाला।।

११. गाथा महल्ला ५.२० में वेद शास्त्र के विचार करने से परमेश्वर का स्मरण होता है और सारा कुल तर जाता है इस बात को निम्न शब्दों द्वारा सूचित किया गया है -

वेद पुराण स्तर विचारं, एकं कार नाम उरधारं।
कुलह समूह सगल उधारं, बड़भागी नानक को तारं।।

१२. वेदों के एक परमेश्वर से स्मरण करने का उपदेश है। इस बात को राग सोरठा महल्लां ९ शब्द ५ में निम्न शब्दों द्वारा प्रकट किया गया है -

कल में एक नाम कृपानिधि जाहि जपे गति पावै।
और धरम ताके सम नाहन इह विधि वेद बतावै।।

१३. कबीर जी का निम्न वचन भी जो गुरु ग्रन्थ साहेब के राग प्रभाती कबीर जी शब्द ३ में पाया जाता है, इस प्रकरण में महत्त्वपूर्ण होने के कारण विशेष उल्लेखनीय है -

वेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न विचारे।।

अर्थात् वेद शास्त्र को झूठा मत कहो। झूठा वह है, जो विचार नहीं करता।

१४. दशम गुरु ग्रन्थ साहिब में वेद की प्रशंसा में अनेक वचन आये हैं, जिन में से विचित्र नाटक अध्याय ४ का गुरु गोविन्दसिंह जी का निम्न वचन उद्धृत किया जाता है -

भुजङ्गप्रयात छन्द -

जिनै वेद पठ्यो सुवेदी कहाए, तिने धरम के करम चलाए।
पठे कागदं मद्र राजा सुधारं, आपो आप में वैरभावं विसारं।।१
नृपं मुकलियं दूत सो कासी आयं, सभै वेदियं भेद भाखे सुनायं।
सभे वेदपाठी चले मद्र देशे, प्रणामं कियो आन कै कै नरेसे।।२
धुनं वेद की भूप ताते कराई, सभे पास बैठे सभा बीच भाई।
पढ़े सामवेदं जुजरवेदकत्थं, ऋगं वेद पाठ्यं करे भाव हत्थं।।३

रसावल छन्द -

अथरववेद पठयं। सुनियो पाप नठियं। रहा रीझ राजा। दीआ सरब साजा।।४

इस वर्णन में बताया गया है कि जिन्होंने वेद पढ़ा, वे वेदी कहाए। (गुरु नानक जी का जन्म इसी वेदी परिवार में हुआ।) उन्होंने उत्तम धर्म के कर्म चलाए। वेदपाठी मद्र देश में गये। राजा ने उन्हें प्रणाम किया। राजा ने उन वेदपाठियों से वेद की ध्वनि करवाई। सामवेद, यजुर्वेद, ऋग्वेद, अथर्ववेद सब वेदों का पाठ करवाया गया, जिस के सुनने से भी पाप भाग गया। राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने उन वेदपाठियों को बहुत सी दक्षिणा दी, इत्यादि। इस प्रकार वेदों की पवित्रता और श्रेष्ठता का प्रतिपादन है।

एक वचन ऐसा भी है जिस में चार ऋषियों के द्वारा चार वेदों को देने का स्पष्ट वर्णन है। यथा -

चार दीवे चहु हथ दीए, एका एकी वारी।

वसन्त हिंडोल महल्ला १ शब्द १।

इनका भाव यह है कि चार दीवे (दीपक) अर्थात् ४ वेद (चह हथ दीए) अग्नि, वायु, आदित्य और अङ्गिरा इन चार के द्वारा दिये एक बार ही (अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में चार वेद चार ऋषियों के द्वारा दिये गये)। जहां कहीं गुरुवचनों में वेदों की निन्दा प्रतीत होती है, वह वेदों की निन्दा नहीं, किन्तु उन लोगों की है, जो केवल वेद का पाठ करते, पर उनके अनुसार पवित्र आचरण नहीं बनाते।

इस प्रकार गुरुग्रंथ साहेब के अनेक वचनों द्वारा भी वेदों का महत्त्व तथा ईश्वरीयत्व स्पष्टतया सूचित होता है।

thearyasamaj.org

अच्छे काम करने से आयु लम्बी होती है

❑ डॉ. अशोक आर्य

प्रत्येक प्राणी की अभिलाषा होती है कि वह लम्बी, अत्यंत लम्बी आयु प्राप्त करे। आयु लम्बी ही नहीं सुखमय भी हो। दु:खों से भरी छोटी सी आयु भी जीवन को जीने का आनन्द प्राप्त करने नहीं देती। दु:खों से भरा प्राणी सदा इस संसार से छुटकारा पाना चाहता है। जब आयु सुखों से भरी हो तो कितनी भी लम्बी हो, इस प्राणी प्रसन्न ही रहता है। इसलिए ही वह सुखों से भरपूर दीर्घ आयु की कामना करता है। दीर्घ आयु के अभिलाषी को कर्म भी ऐसे ही करने होते हैं, जिस से वह प्रसन्नचित्त रह सके, दृश्य भी ऐसे देखने होते हैं, जो उस की प्रसन्नता को बढ़ा सकें। संवाद भी ऐसे सुनने होते हैं, जो उस की खुशियों को बढ़ा सकें। बोलना भी ऐसा होता है, जो अच्छा हो ताकि प्रतिफल में उसके कानों में संवाद भी अच्छे ही पड़ें। इस निमित ऋग्वेद के मन्त्र १.८९.८ तथा यजुर्वेद के मन्त्र २५.२१; सामवेद के मन्त्र १८२४; तैतिरीय ; आर. १.१.१ में बड़ा सुन्दर उपदेश किया गया है :-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्रा।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवासंस्तानुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ऋग्वेद १.८९.८;
यजुर्वेद २५.२१; सामवेद १८२४; तैतिरीय, आर.१.१.१.।।

शब्दार्थ :- (यजत्राः) हे पूजनीय (देवाः) देवा! (कर्णेभिः) हमारे कानों में (भद्रं) मंगल (शुणुयाम) सुनें (अक्षभिः) आँखों से (भद्रं) अच्छा (पश्येम) देखें (स्थिरैः) पुष्ट (अंगैः) अंगों से (तुष्टुवांस) स्तुतिकर्ता (तनुभिः) अपने शरीरों से (देवहितं) देवों के हितकार (यद् आयुः) जो आयु है उसे (व्यशेमहि) पावें।

भावार्थ :-

यह मन्त्र दो बातों पर विशेष बल देता है। यह दो बातें ही मानव जीवन का आधार हैं। यह दो अंग ही मानव का कल्याण कर सकते हैं तथा यह दो अंग ही मानव को विनाश के मार्ग पर ले जा सकते हैं। यदि हम इन दोनों को अच्छे मार्ग पर ले जावेंगे, सुमार्ग पर लेजावेंगे, अच्छे कार्यों के लिए प्रयोग करेंगे तो हम जीवन का उद्देश्य पाने में सफल होंगे। अन्यथा हम जीवन भर भटकते ही रहेंगे, कुछ भी प्राप्त न कर सकेंगे। यह दो विषय क्या हैं, जिन पर इस मन्त्र में प्रकाश डाला गया है, यह हैं :

१. हम अपने कानों से सदा अच्छा भी सुनें।
२. हम अपनी आँखों से सदैव अच्छा ही देखें।

विश्व का प्रत्येक सुख इन दो विषयों से ही मिलता है। हमारी शारीरिक पुष्टि भी इन दो कर्मों से ही होती है। हम यह भी जानते हैं कि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सुख की खोज में भटक रहा है किन्तु वह जानता नहीं कि सुख उसे कैसे मिलेगा? हम यह भी जानते हैं कि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सदा प्रसन्न रहना चाहता है किन्तु वह यह नहीं जानता कि प्रसन्न रहने का उपाय क्या है? जीवन पर्यन्त वह इधर से उधर तथा उधर से इधर भटकता रहता है किन्तु न तो उसे सुख के ही दर्शन हो पाते हैं तथा न ही प्रसन्नता के। हों भी कैसे? जहाँ पर सुख से रहने का, प्रसन्नता से रहने का साधन बताया गया है, वहां तो जाकर खोजने का उसने उपाय ही नहीं किया। वेदों के अन्दर यह सब उपाय बताये गए हैं किन्तु इस जीव ने वेद का स्वाध्याय तो दूर उसके दर्शन भी नहीं किये। किसी वेदोपदेशक के पास बैठकर शिक्षा भी न पा सका। फिर उसे यह

thearyasamaj.org

सब कैसे प्राप्त हो? वेद कहता है कि हे मानव! यदि तू सुखों की कामना करता है, यदि तू जीवन में प्रसन्नचित्त रहना चाहता है, यदि तू हृष्टपुष्ट रहना चाहता है, यदि तू दीर्घ आयु का अभिलाषी है तो वेद की शरण में आ। वेद तुझे तेरी इच्छाएं पूर्ण करने का उपाय बताएगा। प्रस्तुत मन्त्र में भी मानव को सुखमय, संपन्न व प्रसन्नचित्त रहने के उपाय बताये हैं।

यदि मानव आजीवन सुखी रहना चाहता है, यदि मानव आजीवन प्रसन्न रहना चाहता है, यदि मानव आजीवन निरोग व स्वस्थ रहना चाहता है तो उसे अपने आप को कुछ सिद्धान्तों के साथ जुड़ना ही होगा, कुछ नियमों के बंधन में बंधना ही होगा। बिना नियमबध हुए कोई भी कार्य सफल नहीं होता, संपन्न नहीं होता। कर्तव्यपरायण व्यक्ति, दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति के लिए यह नियम अत्यंत ही सरल होते हैं किन्तु कर्म से जी चुरानेवाले के लिए, पुरुषार्थ से भागनेवाले आलसी के लिए यही नियम ही कठोर बन जाते हैं, जिन्हें करने से वह जी को चुराता है। किसी को चाहे यह नियम कठोर लगें या किसी को सरल किन्तु सुख की कामना के लिए, प्रसन्नतापूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए, निरोग शरीर को पाने के लिए तथा लम्बी आयु के लिए इन नियमों का पालन आवश्यक है। इसके बिना कोई अन्य मार्ग उसके पास नहीं है। बस इस के लिए अपने पास अच्छे व सुलझे हुए विचारों का स्वामी होकर मन को अपने वश में रखना होगा, इन्द्रियों को वश में करना होगा तथा अपने में सात्विक भाव जगाकर कर्मशील होना आवश्यक है। यदि हम स्वयं को इस प्रकार चला पाने में सफल होते हैं तो मन्त्र में वर्णित नियम हमें सरल ही लगेंगे। यदि हमारा मन ही हमारे वश में नहीं है, यदि हमारे विचार ही विशृन्खल हैं, यदि हमारा अपनी इन्द्रियों पर ही अधिकार नहीं है तथा हम में कोई सात्विक भाव ही नहीं है तो सुखों की आराधना के लिए जो नियम बनाए गए हैं, वह अत्यंत कठोर लगेंगे। जो इन नियमों को अपने जीवन में अंगीकार कर लेगा, वह सुखी व प्रसन्न होगा, धन ऐश्वर्यों का स्वामी होगा तथा लम्बी आयु वाने का अधिकारी होगा अन्यथा भटकता ही रहेगा।

कठोर अनुशासन के बंधन में बंधे बिना कभी उपलब्धि नहीं मिल सकती। सफलता सदा उसी को ही मिलती है जो कठोरता से नियमों के पालन का व्रत लेता है। अत: स्पष्ट है कि जीवन में कठोर अनुशासन लाये बिना, नियमों का कठोरता से पालन किये बिना न तो सुख मिल सकता है न ही समृद्धि। यदि सुख, समृद्धि ही नहीं पा सके तो प्रसन्नता कहाँ से होगी। फिर प्रसन्नता के बिना लम्बी आयु भी संभव नहीं। अत: लम्बी आयु की कामना करने वालों को कठोर नियमों के बंधन में बंधना ही होगा। प्रस्तुत मन्त्र भी इन दो बातों पर ही प्रकाश डालता है। मन्त्र कहता है कि :-

१. हम अपने कानों से सदा अच्छी बातें ही सुनें। अच्छी चर्चा से मन प्रसन्न होता है। प्रत्येक मानव जो भी कार्य करना चाहता है, वह इतनी प्रसन्नता के लिए ही करता है। अत: अपनी प्रसन्नता के लिए अच्छी चर्चाओं को ही सुनना चाहिए। अच्छी चर्चा को सुनकर मन को प्रसन्नता मिलेगी। प्रसन्न मन सदा राग - द्वेष से दूर रहता है। अत: राग-द्वेष के रोग से भी छुटकारा मिलेगा। हृदय के शांत बनने से जीवन में पवित्रता आवेगी। जिस का जीवन पवित्र है उसको सदा अच्छे मित्र अथवा सहयोगी मिलते हैं, जिससे उसकी ख्याति सर्व दिशा में फैल जाती है।

२. मन्त्र कहता है कि हम यदि सुखी, संपन्न व प्रसन्न और स्वस्थ रहकर लम्बी आयु पाना चाहते हैं तो आँखों से सदा अच्छे दृश्य ही देखें। अच्छे

thearyasamaj.org

दृश्य देखने की अभिलाषा रखने वाले की आँख कभी कुवासना, दूषित मनोवृत्ति के दृश्य देखना पसंद ही नहीं करेगी। दूसरे शब्दों में ऐसा व्यक्ति स्वयमेव ही कुवासना तथा दूषित मनोवृत्ति को अपने पास आने ही नहीं देगा। जब हम कुवासना से रहित होंगे। गंदे व दूषित वातावरण से दूर रहेंगे तो हमें मित्र, सहयोगी व प्रिय लोगों के ही दर्शन होंगे। ऐसे सहयोगी मिलेंगे, ऐसे मित्र मिलेंगे जो इन दुःखों क्लेशों से दूर रहते हुए शुद्ध मन के निर्माण के लिए शुद्ध भावना रखते होंगे। जब हमारा अनुगमन व मार्गदर्शन ऐसे स्वच्छ साथियों के हाथ में होगा तो हमारे में घृणा व कटुता की कोई भावना आ ही नहीं सकेगी। मात्सर्य तथा मनोमालिन्य के अवसर कभी आवेंगे ही नहीं। उत्तम मित्रों में बैठकर प्रत्येक क्षण उत्तम चर्चाएँ होने से कानों में सदैव मधुर स्वर ही पड़ेंगे। ऐसे मित्रों के साथ यात्रा भी करेंगे तो आँखें भी सदा सुन्दर दृश्य ही देख पावेंगे क्योंकि सच्चरित्र कभी बुरा नहीं देखते।

स्पष्ट है कि इन दोनों नियमों के पालन से हमारे संयम को पुष्टि मिलेगी। संयम पुष्ट होने से शरीर स्वस्थ रहेगा। जब शरीर स्वस्थ व निरोग होगा तो मन प्रसन्न रहेगा। स्वस्थ शरीर व प्रसन्न मन ही दीर्घ आयु का आधार होते हैं। इस प्रकार इन दो नियमों के पालन का परिणाम ही दीर्घ आयु की प्राप्ति है। जब मात्र दो नियमों के पालन से हमें सुख, समृद्धि, पुष्टि, संयम, स्वास्थ्य, निरोगता, प्रसन्नता व दीर्घायु के साथ ही साथ अच्छे मित्र व सहयोगी भी मिलेंगे, यश व कीर्ति भी मिलेगी तो इन्हें अपनाने से कौन इंकार करेगा? जब एक साथ इतना कुछ मिलेगा तो इस नियम पालन से हम परहेज कैसे कर सकते हैं? निश्चय ही पालन करेंगे।

१०४ शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी
(गाजियाबाद)

पढ़िये कैसे क्रूरता से हत्या की जाती है निरीह गाय-बैलों की

❑ सुशील गुप्ता

भारत में अंग्रेजी शासन काल में कुल पशुकत्लखानों की संख्या लगभग ३६० के आसपास थी। परन्तु १९४७ में भारत की तथाकथित आजादी और विभाजन के बाद भारत के २२ में से १५ मुसलमानों के पाकिस्तान में चले जाने के बावजूद इन कत्लखानों की संख्या निरन्तर बढ़ती चली गयी। आज पूरे भारत में लगभग ४० हजार पशु कत्लखानें कार्यरत हैं। जिनमें प्रतिवर्ष लगभग १० करोड़ पशुधन व गौवंश प्रतिवर्ष काटा जा रहा है। केन्द्र की कांग्रेस सरकारों ने तो अब मांस उत्पादन व निर्यात को कृषि विभाग के अन्तर्गत मान लिया है। यह भारत की राष्ट्रवादी हिन्दू जनसंख्या व संस्कृति के साथ भद्दा मजाक हो रहा है। इन हजारों कत्लखानों की नंगी तस्वीर निम्न दो बड़े पशु कत्लखानों के वर्णन से समझी जा सकती है।

१. देवनार कत्लखाना : एक एशिया का सबसे बड़ा कत्लखाना है। यह विशाल क्षेत्र में फैला यंत्रों से सज्जित सार्वजनिक क्षेत्र का कत्लखाना है। इसमें प्रतिदिन ११ हजार पशु काटने की क्षमता है। इसका निर्माण चौथी पंचवर्षीय योजना के समय हुआ। इसका संचालन मुम्बई महानगर पालिका करती है। इसमें लगभग ३००० से अधिक कर्मचारी - काम करते हैं। कत्लखाने के अहाते में ही पशु बाजार भी लगता है, जहाँ देशभर से पशु लाये जाते हैं। माँस-चमड़े के व्यापारी उन्हें खरीदकर वहीं कटवाकर माँस-चमड़ा देश विदेश में बेचते हैं। कत्लखानों में ही शीतीकरण वाहनों की भी व्यवस्था

thearyasamaj.org

है। हर रोज काटा हुआ ताजा माँस विशेष माल वाहक हवाई जहाजों से विदेशों में भी यहाँ से भेजा जाता है। जब देवनार कत्लखाना बन रहा था। तब मुम्बई के नागरिकों ने इसका कड़ा विरोध किया था। तब उन्हें यह वचन दिया था, कि यहाँ केवल स्थानीय आपूर्ति के लिए ही पशुओं का कत्ल किया जायेगा। परन्तु इस वचन का कभी पालन नहीं किया गया। बल्कि यहाँ के आयुक्त महोदय ने बाद में यह जवाब दिया, कि 'देवनार कत्लखाने में यदि निर्यात के लिए कत्ल नहीं होगा, तो कत्लखाने का घाटा बहुत बढ़ जायेगा।' इसके विरोध में देवनार गोरक्षा सत्याग्रह ११ जनवरी १९८२ से लगातार अखण्ड अनवरत चौबीस घंटे कई वर्षों तक चलता रहा है। यहाँ महाराष्ट्र के अलावा गुजरात, मध्यप्रदेश व राजस्थान तक से गोवंश व अन्य पशुओं को लाकर काटा जाता है।

२. अलकबीर कत्लखाना : यह आधुनिक कत्लखाना आंध्रप्रदेश के मेदुक जिले में है। दुबई के गुलाम मोहम्मद शेख ने भारत सरकार की ४०० करोड़ रूपये की सहायता से इस अलकबीर गऊ वधशाला की स्थावना की थी। इसमें प्रतिदिन लगभग ६ हजार गायें बहुत ही निर्ममतापूर्वक काटी जाती हैं। इससे २० हजार टन माँस का निर्यात का अनुबंध ईरान कुवैत से हुआ है। इस कत्लखाने में १० हजार लीटर खून प्रतिदिन एकत्रित होता है, जिससे प्लाज्मा, प्रोटीन्स हीमोग्लोबिन टानिक बनता है। यह कत्लखाना ३०० एकड़ भूमि में फैला हुआ है। यहाँ माँस का अधिकतर निर्यात केवल विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

गोवंश-पशु वध करने का विधि : गोवंश व अन्य पशुओं को ट्रकों से बाहर से लाया जाता है। इस कत्लगाह में एक हजार पशु रह सकें ऐसे मौत के कुएँ बने हुए हैं। वहाँ ४ दिनों तक पशुओं को बिना चारे पानी के रखा जाता है। इससे पशु असक्त होकर गिर जाता है। गिरने पर पशु को घसीट कर मशीनों के पास ले जाया जाता है। उसे पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है। मशीन की एकपुली पशु के पिछले पैरों को जकड़ लेती है। इसके पश्चात् उस पर २०० डिग्री सेन्टीग्रेड का गरम पानी ५ मिनट तक गिराया जाता है। मशीन की पुली पिछले पैर को ऊपर उठाती है। पशु एक पैर पर उल्टा लटका दिया जाता है। इसके पश्चात् पशु की आधी गर्दन काट दी जाती है ताकि खून बाहर आ जाये और पशु मरे नहीं (हलालविधि) खून की धारायें बह निकलती हैं। तत्काल पशु के पेट में एक छेद कर हवा भरी जाती है। जिससे पशु फूल जाता है। तत्काल चमड़ा उतारने का कार्य होता है। इस प्रकार जीवित पशु का चमड़ा पतला और कोमल होने से अधिक मूल्य का होता है। चमड़ा उतारते ही पशु के चार टुकड़े किये जाते हैं- गर्दन, पैर, धड़ और हड्डियां। तत्काल मांस डिब्बे बनाकर कारखानों से बाहर आने प्रारम्भ हो जाते हैं। बछड़ों का मांस और चमड़ा अधिक कीमती होता है। इसी प्रकार गर्भवती पशु भी अधिक लाभदायक होते हैं, कसाइयों के लिए। इस पूरी प्रक्रिया में गोवंश व पशुओं का माँस हीमोग्लोबिन पिघलने के कारण लाल हो जाता है, जिसकी कीमत बहुत अधिक हो जाती है। यह सफेद मांस (झटका मांस) से दुगनी कीमत पर बिकता है। इस प्रकार महात्मा गांधी की तथाकथित अहिंसा की नीति पर चलने का दावा करने वाले भारत में उनके ही कपूतों द्वारा पैसे के लालच में हिन्दू विरोधी, भारत विरोधी और संस्कृति विरोधी पशु कत्लखाने हजारों की संख्या में पूरे भारत में चलाये जा रहे हैं। यह सभी सरकारी मान्यताओं और राजनैतिक संरक्षण से चल रहे हैं। आखिर इसका जिम्मेदार कौन ''जागो हिन्दू जागो।''

(गोधन सितम्बर २०१२ से साभार)

thearyasamaj.org

टापुओं के समूह देश – फिजी से एक पत्र

❑ आचार्य आनंद पुरुषार्थी

समा. आर्यप्रवर, सादर नमो नमः, ईश्वरकृपया सर्वत्र सौख्यं स्यादिति। दक्षिण कोरिया से ११ घंटे का सफर कर हम २ सितम्बर २०११ को प्रातः ९.१५ पर फिजी पहुंचे। १५ सितम्बर २०११ को फिजी गणराज्य के पूर्व प्रधानमंत्री श्री महेन्द्रप्रताप चौधरी जी से उनके पार्टी कार्यालय में जाकर एक घंटे तक विचार विमर्श किया। उन्हें अंग्रेजी का सत्यार्थप्रकाश व कुछ अन्य अंग्रेजी साहित्य, 'वेदप्रवचन' आदि भेंट की। आपको ऋषि मेला अजमेर तथ होशंगाबाद गुरुकुल के शताब्दी समारोह में आमंत्रित किया। जनवरी मास में प्रवासी दिवस पर हरवर्ष आप भारत जाते हैं। रोहतक (हरियाणा) के रहने वाले हैं, आपके दादाजी गुरुकुल से पढ़े हुए थे। फिजी में भी आर्य संस्थाओं हेतु उन्होंने काफी कार्य किया है। हमने विशुद्ध राजनीति हेतु आपको कुछ सुझाव दिए, भविष्य में बच्चों के शिक्षा पाठ्यक्रम में ऋषि दयानंद के मन्तव्यों को रखने का विग्रह किया। सौजन्य से सभी बातों पर सिद्धांतरूप में सहमति प्रकट की। ध्यातव्य है १९९९ में आप देश के प्रथमसिंह प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे पर सन् २००० में एक कबीलाई आदिवासी नेता जार्ज स्पाईट ने पूरी केबिनेट को संसद भवन में सेना के कुछ लोगों के साथ मिलकर बंधक बना लिया था, ५६, दिनों तक कैद कर रखा, बड़ी मुश्किल में समझौता होकर छोड़ा था फिर राष्ट्रपति शासन लागू हुआ वह व्यक्ति अभी जेल में है। श्री महेंद्र जी उसके बाद देश के वित्तमंत्री भी रह चुके हैं। संप्रति आप विपक्ष के नेता और भारतीयों की फिजी लेबर पार्टी के सर्वमान्य संचालक है।

३३२ बड़े और ५२२ छोटे द्वीपों के समूह का नाम फिजी राष्ट्र है इसमें ११० द्वीप पूरी तरह निर्जन हैं। ये न्यूजीलैंड के उत्तर पूर्व में है। संसार में सर्वप्रथम सूर्य फिजी में भारत से साढ़े छह घंटे पूर्व उदित होता है। वीति लेबू और वेनुआ लेबू नामक दो प्रमुख द्वीपों पर पूरी प्रजा रहती है, अन्यत्र कम लोग रहते हैं। शताब्दियों से फिजीयन भोले भाले आदिवासी हुआ करते थे जो विकृत पौराणिक पूजा पद्धति को माना करते थे। अपनी व्यापारिक लालसा के चलते अंग्रेज यहाँ आये और १८७४ में पूरे द्वीप को अपना गुलाम बना लिया अन्ततः ईसाई मिशनरी ने शनैः शनैः सब को चर्च के आगोश में ले लिया। बाद में गन्ने की खेती के लिये १८७९ से १९१६ के बीच हजारों भारतीय मजदूर यहाँ बड़ी-बड़ी नौकाओं से सप्लाई किये गये। अब उनकी तीसरी चौथी पीढ़ी चल रही है जो अत्यन्त योग्य बन चुकी है। पूरे देश का क्षेत्रफल १८२७४ वर्ग किलोमीटर व जनसंख्या मात्र साढ़े आठ लाख है इनमें ६५ प्रतिशत ईसाई २८ प्रतिशत हिन्दू ७ प्रतिशत मुसलमान है परन्तु आर्यसमाज से प्रभावित लोगों की संख्या ४ प्रतिशत है। वैश्विक दबाव व स्थानीय मांगों के चलते बिना किसी बलिदान के फिजी १० अक्तूबर १९७० को स्वतंत्र किया गया। तब से अभी तक चार बार केन्द्र सरकार का तख्ता पलट हो चुका है अभी भी राष्ट्रपति शासन चल रहा है जो २०१४ तक जारी रहेगा। २००६ में प्रधानमंत्री एकबिल ला रहे थे जो फिजीयन आदिवासी व भारतीय हिंदुओं के बीच वैमनस्य बढ़ाने का कार्य करने वाला था तब सेना ने शासन अपने हाथ में ले लिया था और भारतवंशियों के अनुकूल कुछ संशोधन विधान में किये जा रहे हैं अतः इस बार के सत्ता परिवर्तन से हिन्दु खुश हैं। १९०४ में फिजी में आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। आर्यसमाज के २२ स्कूल लॉ कॉलेज व स्वयं का विश्वविद्यालय यहाँ पर संचालित है। आर्य प्रतिनिधि सभी फिजी ने हमें एक मास के लिए आमंत्रित किया था, इस एक मास में एक भी दिन हम खाली नहीं बैठ सके हैं। हजारों छात्र-छात्राओं के बीच स्कूलों में तथा दो पृथक् पृथक् विश्वविद्यालयों में हमारे व्याख्यान हुए। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक, दार्शनिक, राष्ट्रीय, सामाजिक,

thearyasamaj.org

पारिवारिक, वैदिक व ऐतिहासिक विभिन्न विषयों पर प्रति रात्रि में हमें उपदेश देने का सुअवसर प्राप्त हुआ जिसमें श्रोतृवर्ग में पृथक् पृथक् सत्रों में हाईकोर्ट के दो पूर्व न्यायाधीश, डॉक्टर, इंजीनियर, प्राचार्य, प्राध्यापक, राजनेता, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के संचालक उद्योगपति, उच्चाशिक्षित युवावर्ग सहित प्रबुद्धजन सम्मिलित हुए। फिजी के प्रसिद्ध हिन्दी समाचारपत्र शांतिदूत ने हमारा विस्तृत इंटरव्यू लिया और उसे मुख्यरूप से प्रकाशित किया, फिजी रेडियो ने कुल २२ प्रवचन रिकार्ड किये जो प्रति मंगलवार प्रातः छह बजे संस्कृति कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रसारित होते रहेंगे। समय निकालकर हमने दो विश्वविद्यालयों के दो उपकुलपतियों, भारत के फिजी में महामहिम राजदूत श्री वीरेन्द्र जी, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक श्री के के मिश्रा जी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एक आदिवासी कबीले बा के सामंत शहंशाह, सहित कुछ विशिष्ट जनों से मुलाकात की और इन्हें वैदिक साहित्य भेंट किया। पू. स्वामी जगदीश्वरानंद जी के बाद २५ वर्ष हो गये कोई गुरुकुल के स्नातक का व्यवस्थित आगमन यहाँ हुआ ही नहीं, भारत की ओर ये आशाभरी दृष्टि से निहारते ही रहे गये। कोई सुयोग्य स्नातक यहाँ रहे और इन्हें मार्गदर्शन दे तो समीचीन होगा। यहाँ के प्रायः सभी आर्य विद्यालयों में दैनिक यज्ञ, भोजन मंत्र, शांतिपाठ आदि प्रतिदिन अभ्यास होता है पुनरपि सार्वदेशिक से लंबेकाल तक दूर रहने से अनेकत्र कुछ सुधार अपेक्षित है। इस पाँचवीं विदेश यात्रा पर हमें उत्तरी अमेरिका व यूरोप जाना था पर प्रभु की विचित्र व्यवस्था से इस रमणीक द्वीप आना हो गया। ईश्वरेच्छा बलीयसी। दीपमालिका पर्व की शुभकामनायें। ऋषि दयानंद के निर्वाण दिवस पर स्वामियों, परिजनों को विशेष प्रेरणा दीजियेगा - सर्वेभ्यो नमो वाच्यम्।

हे परमेश्वर !

'बार बार नर तन को पाऊँ पढ़ूँ तुम्हारी वाणी को।
भेंट धरूँ मैं देश धर्म हित बारम्बार जवानी को।।'

'जिज्ञासु'

***

"श्री मोहन कृति आर्ष तिथिपत्रक"

गणितकर्ता एवं सम्पादक

आचार्य दार्शनेय लोकेश

सी-२७६, गामा-1, ग्रेटर नोएडा,
(उ०प्र०) - २०१३१०
फोन० नं० :- ०१२०-६५४४६२८,
मो० :- +९१-९४१२३५४०३६
ईमेल :-darshaney.smkatp@gmail.com

अतिप्रसन्नता का विषय है कि भारत में पहली बार वेदानुकूल, ऋतुसम्बद्ध मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस्, नभस्य, ईष ऊर्ज, सहस्, तपस् और तपस्य वैदिक महीनों में व्यक्त शुद्ध वैदिक पंचांग की गणित व प्रकाशन का कार्य हो गया है।

आज तक जो भी पंचांग आप को प्राप्त हैं वे कपोलकल्पित संक्रान्तियों तथा नक्षत्रों पर आधारित रहे हैं। इनके कारण आप सही तिथियों में त्यौहार आदि तो क्या नित्यप्रति के सन्ध्या-यज्ञादि के संकल्प तक गलत करते चले आये हैं। ज्योतिष का स्वयं को ज्ञान व परिचय न होने से आप गलत राह पर चलने को विवश रहे। इसी से आप अपने व्रत और त्यौहार गलत तिथियों में मना रहे हैं। जैसे कि आपने वास्तविक दीपावली के दिन पितृ विसर्जन मनाया है। शरद की बजाय हेमन्त ऋतु में विजय दशमी और शरद पूर्णिमा मनायेंगे आप। २३ अक्तूबर प्रातः से हेमन्त ऋतु प्रारम्भ हो जायेगी। स्पष्ट है कि २९.१०.१२ की पूर्णिमा शरद नहीं, हेमन्त पूर्णिमा है। भ्रान्त पंचांगों से मुक्ति दिलाने वाले आचार्य दार्शनेय लोकेश के श्री मोहन कृति आर्ष तिथिपत्रक रूपी वैदिक पंचांग का अभिनन्दन करें। इसमें त्यौहारों की सही-सही तिथियां मिलेंगी।

thearyasamaj.org

आर्य वीर दल मुम्बई के स्वर्ण जयन्ती समारोह पर सम्मान

❑ **धर्मधर आर्य,** महामंत्री आर्य वीरदल, मुम्बई

आर्य वीर दल मुम्बई की स्थापना ५० वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयन्ती वर्ष का समापन समारोह मंगलवार दि. २ अक्तूबर, २०१२ को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली के प्रधान संचालन डॉ. स्वामी देवव्रत जी की विशेष उपस्थिति में सर्वप्रथम वैदिक राष्ट्रगीत ''आब्रह्मन्'' से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। आर्य वीर दल मुम्बई के संचालक **श्री नरेन्द्र शास्त्री** ने दल का परिचय दिया, तत्पश्चात् मंच संचालक **श्री यशप्रिय आर्य** ने गत् ५० वर्ष मे किये गए दल के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। इस भव्य कार्यक्रम में अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति रही जिसमें मुम्बई के पुलिस आयुक्त **डॉ. सत्यपाल सिंह और डॉ. स्वामी देवव्रत जी** का संगीत के साथ विशेष स्वागत, सम्मान और अभिवादन किया गया और उनका आशीर्वाद और मार्गदर्शन लिया गया।

''**भाषण प्रतियोगिता**'' पांच भाषाओं (संस्कृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती एवं अंग्रेजी) में आयोजित की गई। ५० वर्ष की उपलब्धि के रूप में दल को सन् १९८८ के रामाश्रम पवई (हिरानन्दानी) के शिविर में ब्र. अरुण कुमार 'आर्य वीर' को सफल शिविर संचालक, शिक्षक एवं ओजस्वी वक्ता के लिए स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। जीवनभर आर्य वीर दल और आर्यसमाज के लिए कार्य करने वालों और उनके परिवारों को भी सम्मानित किया गया।

विशेष कार्य हेतु श्री वीरेन्द्र अग्रवाल जिन्होंने महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित ७८ ग्रन्थों में से ग्रन्थों को स्कॅन कर एक डी.वी.डी. में संकलित करके एक अद्‌भुत ऐतिहासिक कार्य किया। विचार वेल्यू एज्युकेशन ने भारत के कई प्रान्तों में विद्यालयों के विद्यार्थियों में विकास हेतु क्रान्तिकारियों एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र पर वीसीडी बनाई है, दल की ओर से उनको स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया। डॉ. श्री तारासिंह जी के वैदिक आरोग्य केन्द्र के अन्तर्गत मीरा रोड में कई वर्षों से यज्ञ के द्वारा चिकित्सा कर रहे हैं तथा कई असाध्य रोगों की सफल चिकित्सा हेतु, श्री व्रज पटेल जिनका महर्षि दयानन्द फाउण्डेशन, दादर के नाम से एक विशाल ग्रंथालय है। आप स्नातक स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं को उच्च राजकीय सेवा (आई.ए.एस.) आदि के लिए उचित मार्गदर्शन तथा परीक्षाएं दिलवा रहे हैं। दल की ओर से उनको भी स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया।

पूर्व संचालक श्री ओम्प्रकाश आर्य को आजीवन आर्य वीर दल मुम्बई के लिए कार्य करने हेतु आर्य गौरव पुरस्कार में रु. ग्यारह हजार एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। श्री यज्ञसेन आर्य, विजय नगर (राजस्थान) लेखन प्रतियोगिता में विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया।

अन्त में, आर्य वीर दल के महामंत्री पं. धर्मधर आर्य ने मुम्बई प्रदेश आर्य विद्या सभा को जिनके सौजन्य से प्रांगण की उपलब्धि हुई और आर्यसमाज घाटकोपर के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्त्ताओं का विशेष रूप से आभार प्रदर्शन किया।

***

thearyasamaj.org

११वीं अखिल भारतीय गुरुकुल क्रीड़ा प्रतियोगिता धूमधाम से सम्पन्न

ग्यारहवीं अखिल भारतीय क्रीड़ा व सांस्कृतिक प्रतियोगिता का त्रिदिवसीय आयोजन ७ से ९ नवम्बर २०१२ को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में किया गया। प्रत्येक वर्ष की भान्ति समस्त भारतवर्ष से अनेक गुरुकुलों ने इस प्रतियोगिता में बढ़चढ़ कर भाग लिया। ७ नवम्बर बुधवार को प्रात:काल गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री कुलवन्त सैनी के द्वारा ध्वजारोहण किया गया और सभी गुरुकुलों के प्रतिभागियों ने अपने-अपने गुरुकुल-बैनर के साथ पदसंचालन (परेड) करते हुए मंच पर उपस्थित कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल झज्जर के प्राचार्य-आचार्य श्री विजयपाल जी को अभिवादन करते हुए क्रीड़ा प्रांगण की परिक्रमा की।

इस अवसर पर खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए श्री कुलवन्त सैनी ने कहा कि खेलों से विद्यार्थियों में अनुशासन, सजगता, एकता, एकाग्रता, दृढ़ निश्चय व धैर्य जैसे गुणों का विकास होता है और आलस्य समाप्त होता है।

इस अवसर पर आचार्य विजयपाल जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि विद्यार्थियों को केवल शिक्षा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए बल्कि उन्हें खेलों में भी भाग लेना चाहिए ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके। पाठ्य सहचारी गतिविधियों में खेलों का अपना अलग महत्त्व है। उन्होंने कहा कि हमारा ध्येय है गुरुकुलों के छात्र भी खेलों के क्षेत्र में देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपना परचम लहरा पायें।

इस अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य जी की अनुपस्थिति सबको खल रही थी क्योंकि वे दुर्घटनग्रस्त होने के कारण उपस्थित होने में असमर्थ थे।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के एक खिलाड़ी द्वारा सभी खिलाड़ियों को शपथ दिलाई गई और आचार्य विजयपाल जी द्वारा खेलने के प्रारम्भ की घोषणा की गई। सर्वप्रथम गुरुकुल कुरुक्षेत्र व गुरुकुल झज्जर के बीच रसाकस्सी की प्रतिस्पर्धा हुई जिसमे गुरुकुल कुरुक्षेत्र विजयी हुआ और इसी के साथ इस त्रिदिवसीय गुरुकुल क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का भव्य व रोमांचक आगाज हो गया।

प्रतियोगिता समापन के अवसर पर गुरुकुल के छात्रों द्वारा घुड़सवारी के विभिन्न करतब दिखाये गए। जो कि अत्यन्त रोमांचक कार्यक्रम थे। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में दिल्ली पब्लिक स्कूल रोहतक के चेयरमैन व रणजी ट्राफी विजेता श्री मुकेश चन्द्र ने खिलाड़ियों को पुरस्कार बाटें। उन्होंने कहा कि खेल केवल व्यक्तित्व ही नहीं, बल्कि आपसी रिश्तों और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को भी नई दिशा देते हैं।

अन्त में श्री कुलवन्त सैनी जी ने सभी खिलाड़ियों और सहयोगी कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद दिया और विशेषकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राध्यापक व गुरुकुल क्रीड़ा प्रतियोगिता के महामन्त्री श्री नन्दकिशोर जी जिनके अटूट सहयोग से यह प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। उनके प्रति विशेष आभार व्यक्ति किया। शान्तिपाठ के साथ प्रतियोगिता समापन समारोह हुआ।

thearyasamaj.org

प्रतियोगिता परिणाम निम्न प्रकार से रहे :-

अखिल भारतीय गुरुकुल क्रीड़ा/भाषण/संगीत/अष्टाध्यायी स्मरण/प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का अन्तिम परिणाम

वरिष्ठ वर्ग

१.	**कबड्डी राष्ट्रीय** -	प्रथम-गुरुकुल फतेहाबाद,	द्वितीय - गुरुकुल सिंहपुरा
२.	**कबड्डी हरियाणा** -	प्रथम - गुरुकुल सिंहपुरा,	द्वितीय - गुरुकुल फतेहाबाद
३.	**फुटबॉल** -	प्रथम- गुरुकुल कुरुक्षेत्र,	द्वितीय - गुरुकुल आर्यनगर
४.	**वॉलीवाल** -	प्रथम गुरुकुल कुरुक्षेत्र	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर
५.	**रस्साकसी** -	प्रथम-गुरुकुल कुरुक्षेत्र	द्वितीय - गुरुकुल सिंहपुरा
६.	**योगासन** -	प्रथम गुरुकुल सिंहपुरा	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर
७.	**मल्लखम्भ** -	प्रथम गुरुकुल कुरुक्षेत्र	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर

कनिष्ठ वर्ग

१.	**कबड्डी राष्ट्रीय** -	प्रथम- गुरुकुल झज्जर	द्वितीय - गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
२.	**कबड्डी हरियाणा** -	प्रथम-गुरुकुल सिंहपुरा	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर
३.	**रस्साकसी**-	प्रथम-गुरुकुल सिंहपुरा	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर
४.	**खो-खो** -	प्रथम गुरुकुल कुरुक्षेत्र	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर
५.	**योगासन**-	प्रथम - गुरुकुल झज्जर	द्वितीय - गुरुकुल घासेड़ा
६.	**मल्लखम्भ** -	प्रथम- गुरुकुल कुरुक्षेत्र	द्वितीय - गुरुकुल झज्जर

बाल वर्ग

कबड्डी राष्ट्रीय : प्रथम - गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वितीय - गुरुकुल घासेड़ा

कुश्ती

२६ किलोग्रामः	प्रथम - विकास, झज्जर	द्वितीय- सचिन, कुरुक्षेत्र, तृतीय-सागर, कुरुक्षेत्र
२८ किलोग्राम :	प्रथम-धनंजय, घासेड़ा	द्वितीय-सिद्धार्थ, घासेड़ा, तृतीय-मोहित, झज्जर
३० किलोग्राम :	प्रथम - अंकित, झज्जर	द्वितीय-ललित, झज्जर, तृतीय-मनीष, इन्द्रप्रस्थ
३३ किलोग्रामः	प्रथम - अंकित, झज्जर	द्वितीय- रविन्द्र, झज्जर, तृतीय-अविनाश, घासेड़ा
३६ किलोग्राम :	प्रथम-मंजीत, झज्जर	द्वितीय-अंकित, झज्जर, तृतीय- मोनू, सिंहपुरा
४० किलोग्राम :	प्रथम-संदीप, झज्जर	द्वितीय- सचिन, घासेड़ा, तृतीय-अजय, झज्जर
४४ किलोग्राम :	प्रथम-राहुल, सिंहपुरा	द्वितीय- दीपक, झज्जर, तृतीय- आकाश, झज्जर
४८ किलोग्राम :	प्रथम-सुनील, सिंहपुरा	द्वितीय-ललित, घासेड़ा, तृतीय-धर्मेन्द्र, झज्जर
५२ किलोग्राम :	प्रथम-नेत्रपाल, झज्जर	द्वितीय-संजय, झज्जर, तृतीय-अंकित, सिंहपुरा
५७ किलोग्राम :	प्रथम-संजय, झज्जर	द्वितीय-सुनील, सिंहपुरा, तृतीय-हिमांशु, सिंहपुरा

thearyasamaj.org

६२ किलोग्राम : प्रथम-सन्दीप, झज्जर द्वितीय-धर्मेन्द्र, झज्जर, तृतीय-मनुदेव, सिंहपुरा
६८ किलोग्राम : प्रथम-धमेन्द्र, झज्जर द्वितीय-सन्दीप, झज्जर, तृतीय-रविन्द्र, इन्द्रप्रस्थ
७४ किलोग्राम : प्रथम-सन्दीप, झज्जर द्वितीय-धर्मेन्द्र, झज्जर, तृतीय-सोनू, सिंहपुरा
+७४ किलोग्राम (गुरुकुल केसरी) प्रथम- सन्दीप, झज्जर, द्वितीय- ब्रह्मदेव, झज्जर
तृतीय- सोनू, सिंहपुरा

एथलेटिक्स (वरिष्ठ वर्ग)

१०० मीटर दौड़ -
प्रथम- **मनजोत**, कुरुक्षेत्र (११.८४)
द्वितीय- **राजेश**, झज्जर (१२.२२)
तृतीय- **सन्दीप**, झज्जर (१२.६६)

४०० मीटर दौड़ -
प्रथम-**मनजोत**, कुरुक्षेत्र (१.००)
द्वितीय - **आशीष**, कुरुक्षेत्र (१.००)
तृतीय - **सन्दीप**, झज्जर (१.०३)

८०० मीटर दौड़ -
प्रथम-**उदय**, झज्जर (२.२०.२२)
द्वितीय-**मनोज**, आर्यनगर (२.२१.२२)
तृतीय - **सोन**, कुम्भाखेड़ा (२.२२.९४)

१५०० मीटर दौड़ -
प्रथम - उदय, झज्जर
द्वितीय - ऋतेश, झज्जर
तृतीय - अमित, इन्द्रप्रस्थ

५००० मीटर दौड़ -
प्रथम - राजेश, झज्जर (१८.११) द्वितीय - उदय, झज्जर (१९.११)
तृतीय- प्रवीण, झज्जर (१९.५४) चतुर्थ - ऋतेश, झज्जर (१९.५५)
पंचम - हिमांशु, सिंहपुरा (१९.५६)

ऊँची कूद - प्रथम - प्रवीण, कुरुक्षेत्र (५.३) द्वितीय - आशीष, कुरुक्षेत्र (५.२)
लम्बी कूद- प्रथम - विनय, कुरुक्षेत्र द्वितीय - मनजोत, कुरुक्षेत्र, तृतीय - प्रवीण, इन्द्रप्रस्थ
भारोत्तोलन- प्रथम-ब्रह्मदेव, झज्जर द्वितीय - अमित, गौतमनगर, तृतीय - अमित, इन्द्रप्रस्थ
गोला फैंक - प्रथम - अंकुश, कुरुक्षेत्र द्वितीय - साहिल राणा, कुरुक्षेत्र, तृतीय -ब्रह्मदेव, झज्जर
मल्लखम्भ- प्रथम - मुकेश व प्रशांत, कुरुक्षेत्र, द्वितीय - चिराग, कुरुक्षेत्र, तृतीय - जतिन, कुरुक्षेत्र
योगासन- प्रथम - विपिन, झज्जर द्वितीय - रोहित, झज्जर तृतीय - कर्ण, झज्जर

सांस्कृतिक (वरिष्ठ वर्ग)

१. भाषण हिन्दी
प्रथम - अभिषेक, कुरुक्षेत्र
द्वितीय - प्रशिष, कुरुक्षेत्र
तृतीय - अनिल पाराशर, गौतमनगर

२. भाषण संस्कृत
प्रथम - दीपक पाराशर, गौतमनगर
द्वितीय - रवि कुमार, झज्जर

३. गायन हिन्दी
प्रथम - सुखदेव, पौन्धा
द्वितीय - वेदमित्र, कुरुक्षेत्र
तृतीय - अंकुश, कुरुक्षेत्र

४. गायन संस्कृत
प्रथम - वेदमित्र, कुरुक्षेत्र
द्वितीय - सुखदेव, पौन्धा
तृतीय - अनुराग, कुरुक्षेत्र

thearyasamaj.org

५. प्रश्नोत्तरी – प्रथम – नयन, भानुप्रताप, कुरुक्षेत्र द्वितीय – अर्जुन, दीपूदास, झज्जर
तृतीय – विनीत, अनुज, मन्झावली

एथलेटिक्स (कनिष्ठ वर्ग)

१०० मीटर दौड़
प्रथम–मंजोत, कुरुक्षेत्र (१२.०३)
द्वितीय – राजेश, झज्जर (१२.१०)
तृतीय – प्रवीण, झज्जर (१३.१६)

४०० मीटर दौड़
प्रथम – रामभारती, कुरुक्षेत्र (०.०१.२५)
द्वितीय – राजेश, झज्जर (१.०२.४६)
तृतीय – प्रवीण, झज्जर (१.०२.८८)

८०० मीटर दौड़
प्रथम – राजेश, झज्जर (२.२१.९३)
द्वितीय – प्रवीण, झज्जर (२.२३.६०)
तृतीय – नितीश, कुरुक्षेत्र (२.२९.७८)

१५०० मीटर दौड़
प्रथम – राजेश, झज्जर
द्वितीय – प्रवीण, झज्जर
तृतीय – ऋतेश, कुरुक्षेत्र

ऊँची कूद
प्रथम – राजेश, झज्जर (५.४)
द्वितीय – प्रवीण, कुरुक्षेत्र (५.३)
तृतीय – आशीष, कुरुक्षेत्र (५.२)

लम्बी कूद
प्रथम – सौरभ, कुरुक्षेत्र
द्वितीय – सुमित, कुरुक्षेत्र
तृतीय – प्रवीण, इन्द्रप्रस्थ, राजेश, झज्जर

मल्लखम्भ
प्रथम – विपिन, कुरुक्षेत्र
द्वितीय – चिराग, कुरुक्षेत्र
तृतीय – जतिन, कुरुक्षेत्र

योगासन
प्रथम–हितेश, मोहनलाल, झज्जर
द्वितीय – रोहित, घासेड़ा
तृतीय – प्रवीण, झज्जर

सांस्कृतिक (कनिष्ठ वर्ग)

१. भाषण हिन्दी
प्रथम – कार्तिक, कुरुक्षेत्र
द्वितीय – शिवम्, कुरुक्षेत्र
तृतीय – आशुतोष, आर्यनगर

२. भाषण संस्कृत
प्रथम – अरुण सलूजा, गुरुकुल कुरुक्षेत्र
द्वितीय – हर्ष कुमार, कुरुक्षेत्र
तृतीय – रवि, झज्जर

३. गायन हिन्दी
प्रथम – आदित्य, कुरुक्षेत्र
द्वितीय – रोहित सैनी, घासेड़ा
तृतीय – देवाशिष, कुरुक्षेत्र

४. गायन संस्कृत
प्रथम – आदित्यप्रकाश, कुरुक्षेत्र
द्वितीय – राहुल, गौतमनगर
तृतीय – आदित्य, कुरुक्षेत्र

एथलेटिक्स (बाल वर्ग)

१०० मीटर दौड़
प्रथम – निलेश, गौतमनगर
द्वितीय – वैभव शुक्ला, गौतमनगर
तृतीय – कर्मजीत, कुम्भाखेड़ा

२०० मीटर दौड़
प्रथम – निलेश, गौतमनगर (२९.१३)
द्वितीय – कर्मजीत, कुम्भाखेड़ा (३१.१२)
तृतीय – वैभव शुक्ला, गौतमनगर (३१.१५)

thearyasamaj.org

अष्टाध्यायी परीक्षा का परिणाम

१. विमल आर्य सुपुत्र श्री राजेश आर्य –	कुरुक्षेत्र	प्रथम	९७
२. अनिल आर्य सुपुत्र श्री जगराम सिंह –	कुरुक्षेत्र	प्रथम	९७
३. विशाल आर्य सुपुत्र श्री मनोज सिंह –	ज्योतिसर	प्रथम	९६
४. कार्तिक आर्य सुपुत्र श्री सतपाल सिंह –	गौतमनगर	द्वितीय	७५
५. देवेन्द्र आर्य सुपुत्र श्री कृष्णपाल –	गौतमनगर	द्वितीय	६८
६. गौरव आर्य सुपुत्र श्री धर्मवीर सिंह –	पौंधा	द्वितीय	६२
७. विनीत आर्य सुपुत्र श्री अजीत सिंह –	मंझावली	तृतीय	३९
८. अनुज कुमार सुपुत्र श्री गजेन्द्र सिंह –	मंझावली	तृतीय	३६
९. ओम्प्रकाश सुपुत्र श्री अशोक बरबड़े –	पौंधा	तृतीय	८७

नियमानुसार केवल प्रथमावृत्ति पढ़ने वाले छात्र ही इसमें भाग ले सकते थे। ओम् प्रकाश काशिका का अध्ययन कर रहे हैं इसलिए उन्हें पात्र न होते हुए भी सान्त्वना पुरस्कार के रूप में तृतीय पुरस्कार दिये जाने की अनुशंसा निर्णायक मण्डल द्वारा की गई।

धातुपाठ परीक्षा का परिणाम

१. रवि आर्य सुपुत्र विनोद आर्य –	कुरुक्षेत्र	प्रथम	९१
२. अनिल आर्य सुपुत्र श्री सोमदत्त –	गौतमनगर	प्रथम	८९
३. सागर आर्य सुपुत्र श्री आदेश कुमार –	कुरुक्षेत्र	द्वितीय	८३
४. रौनक आर्य सुपुत्र श्री दिनेश कुमार –	झज्जर	द्वितीय	६२
५. केशव आर्य सुपुत्र श्री जगराम मौर्य –	गौतमनगर	तृतीय	६२
६. हिमांशु आर्य सुपुत्र श्री कटासिंह –	इन्द्रप्रस्थ	तृतीय	५७
७. रवि कुमार सुपुत्र श्री मनसुख –	झज्जर	तृतीय	२८

ऑल ओवर चैम्पियनशिप (सम्पूर्ण–सर्वविजेता)

गुरुकुल झज्जर

कुश्ती सर्वविजेता

गुरुकुल झज्जर

एथलेटिक्स सर्वविजेता

गुरुकुल झज्जर

सांस्कृतिक सर्वविजेता

गुरुकुल कुरुक्षेत्र

thearyasamaj.org

समाचार प्रभाग

महाविद्यालवय गुरुकुल झज्जर का वार्षिक उत्सव ९, १० मार्च को

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का वार्षिक उत्सव दिनांक ९, १० मार्च २०१३ को उत्साहपूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर यजुर्वेद-पारायण महायज्ञ का आयोजन होगा जिसकी पूर्णाहुति १० मार्च को होगी। यजमान बनने के इच्छुक व्यक्ति अभी से अधोहस्ताक्षरी से सम्पर्क करके अपना स्थान आरक्षित करा लें।

उत्सव पर अनेक संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक पधारेंगे जिनके उपदेशों से ज्ञानलाभ होगा और जीवन-निर्माण की प्रेरणा प्राप्त होगी। दिनांक ९ मार्च को दोपहर बाद ब्रह्मचारियों के रोमांचक प्रदर्शन होंगे जिनमे जीप रोकना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, कमाण्डो-करतब, आसन-व्यायाम प्रदर्शन, लाठी-भाला आदि का संचालन आदि अनेक आकर्षक कार्यक्रम होंगे। दर्शक उनको देखकर मन्त्रमुग्ध हो जायेंगे। आप भी इन कार्यक्रमों को देखते अवश्य पहुँचे।

सभी यज्ञप्रेमी और गुरुकुल-प्रेमी आर्यों से निवेदन है कि वे अपनी उक्त तिथियों को सुरक्षित रखें और गुरुकुल में अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

– **आचार्य विजयपाल,** महाविद्यालय गुरुकुल, झज्जर

गुरुकुल आमसेना द्वारा निःशुल्क बवासीर चिकित्सा शिविर सम्पन्न

गत १५ से १९ सितम्बर तक गुरुकुल आमसेना एवं परममित्र मानव निर्माण संस्थान के संयुक्त तत्त्वाधान में ५ दिनों में टांगरपाली जि. बरगढ़ं, आर्यसमाज सम्बलपुर, नवप्रभात आश्रम नुआपाली तथा गुरुकुल आमसेना के आर.बी.डी. अस्पताल में बवासीर का नि:शुल्क चिकित्सा अहमदाबाद से आये हुए डॉ. कृष्णानन्द चित्ताणियां, डॉ. शिवानन्द एवं कांजीभाई जी द्वारा किया गया। इस बवासीर कैम्प में जर्मन रींग पद्धति का इस्तेमाल किया गया था। पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती एवं पूज्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती लगातार ५ सालों से ऐसे नि:शुल्क बवासीर कैम्प लगाते आ रहे हैं। गुरुकुल आमसेना शिविर में २०० रोगियों ने स्वास्थ्यलाभ प्राप्त किया। टांगरपाली में १२०, सम्बलपुर में १६० तथा नवप्रभात आश्रम नुआपाली में ३५० रोगियों का इलाज हुआ। इस सेवाकार्य का सम्पूर्ण श्रेय स्वामी धर्मानन्द जी एवं स्व. श्री चौ. मित्रसेन जी आर्य के परममित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक को जाता है।

– गुरुकुल आश्रम आमसेना,

खरियार रोड, जिला – नवापारा ओडिया – ७६६१०९

thearyasamaj.org

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	सामवेद पदसंहिता	२५-००
३३.	ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दो में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2011-13

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

ग्राहक संख्या

श्री ____________

स्थान ____________

डा० ____________

जिला ____________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।